अपने धर्मविज्ञान का निर्माण करना

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय दो

मसीही धर्मविज्ञान की खोज

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

1. परिचय (0:28) 4

2. मसीही धर्मविज्ञान (2:11) 4
   - A. परिभाषाओं के साथ समस्याएँ (3:09) 4
   - B. कार्यकारी परिभाषा (9:25) 5
   - C. एकता एवं विविधता (12:48) 6
     - *1.* एकीकृत धर्मविज्ञान (13:23) *6*
     - *2.* बहु-धर्मविज्ञान (17:46) *7*

3. मसीही परंपराएं (23:14) 8
   - A. “परंपरा” की परिभाषा (23:54) 8
     - *1.* नकारात्मक परिभाषा (24:20) *8*
     - *2.* सकारात्मक परिभाषा (25:47) *9*
   - B. परंपराओं की प्रवृत्तियां (28:40) 10
     - *1.* सिद्धांत (29:16) *10*
     - *2.* व्यवहार (29:58) *10*
     - *3.* कारुणिकता (भावनाएं) (30:33) *11*
   - C. परंपराओं का महत्व (31:22) 11
     - *1.* अपने बारे में जागरुकता (31:49) *11*
     - *2.* दूसरों के बारे में जागरूकता (34:47) *12*

4. सुधारवादी परंपरा (35:39) 12
   - A. उत्पत्ति एवं विकास (37:27) 12
   - B. प्रवृत्तियां (41:35) 13
   - C. विशेषताएं (43:58) 14
     - *1.* धर्मसुधार आन्दोलन के *सोला* (44:40) *14*
     - *2.* पवित्रशास्त्र की एकता (47:15) *15*
     - *3.* परमेश्वर का सिद्धांत (50:23) *16*
     - *4.* मानवीय संस्कृति (54:20) *16*

5. उपसंहार (58:32) 18

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 19

उपयोग के प्रश्न 25

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें** — जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नोट्स

1. परिचय (0:28)

2. मसीही धर्मविज्ञान (2:11)

यह शब्द इन्हें दर्शाता है :

- जो मसीही *वास्तव में* विश्वास करते हैं
- जो मसीहियों को विश्वास *करना चाहिए*

A. परिभाषाओं के साथ समस्याएँ (3:09)

एक सबसे बड़ी समस्या : मसीही धर्मविज्ञान को गैर-मसीही धर्मविज्ञान से अलग करने के तरीके खोजना।

धर्मविज्ञान के अनेक समूह मसीही और गैर-मसीही विचारों को मिला देते हैं, जिससे वे कभी-कभी सच्ची मसीहियत को अन्य धर्मों से अलग करने में कठिनाई उत्पन्न करते हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस बात को संक्षिप्त रूप से जानना कठिन है कि कौनसे तत्व धर्मविज्ञान के सच्चे रूप से मसीही होने के लिए आवश्यक हैं।

B. कार्यकारी परिभाषा (9:25)

प्रेरितों का विश्वास कथन :

मैं सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर में विश्वास करता हूँ,
जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।
मैं उसके एकमात्र पुत्र, हमारे प्रभु, यीशु मसीह में विश्वास करता हूँ।
जो पवित्र आत्मा से कुवांरी मरियम के द्वारा पैदा हुआ।
उसने पोन्तियस पिलातुस के हाथों दुःख सहा, क्रूस पर चढ़ाया गया, मारा गया और गाड़ा गया;
वह अधोलोक में उतरा।
तीसरे दिन वह मृतकों में से फिर जी उठा।
वह स्वर्ग में चढ़ गया।
और वह सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है।
जहां से वह जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए आएगा।
मैं पवित्र आत्मा में,
पवित्र सार्वभौमिक कलीसिया,
पवित्र संतों की संगति,
पापों की क्षमा में,
देह के पुनरुत्थान में
और अनन्त जीवन में विश्वास करता हूँ।

हमारे उद्देश्यों के लिए, वह धर्मविज्ञान जो इस विश्वास कथन के अनुसार हो उसे मसीही धर्मविज्ञान माना जा सकता है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. एकता एवं विविधता (12:48)

मसीही विश्वास में धर्मविज्ञान एकीकृत भी है और विविध भी।

1. एकीकृत धर्मविज्ञान (13:23)

मसीही कई मुख्य धारणाओं पर सहमत होते हैं और उन्हें झूठे समूहों और अन्य धर्मों से अलग करते हैं।

कलीसिया की सैद्धांतिक एकता ऐसा लक्ष्य होना चाहिए जो सब मसीहियों का लक्ष्य हो।

यह हमारा उत्तरदायित्व है कि हम मसीह की देह में प्रगतिशील धर्मविज्ञानीय एकता को बढाएं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. बहु-धर्मविज्ञान (17:46)

जहाँ मसीही धर्मविज्ञान कई स्तरों पर एकीकृत है, वहीँ इसमें पाई जाने वाली विविधता के स्तरों को मान लेना और स्वीकार करना भी महत्वपूर्ण है।

a. मानवीय सीमितताएँ

कुछ विविधताएं केवल इसलिए हैं क्योंकि हम एकसमान बल के साथ प्रत्येक धर्मवैज्ञानिक सत्य को प्रस्तुत नहीं कर सकते।

छुड़ाए गए लोग अपने विश्वास के भिन्न पहलुओं को व्यक्त करते हैं :

- अपने सांस्कृतिक परिदृश्य के अनुसार
- अपनी विशेष आवश्यकताओं के प्रत्युत्तरों में

b. पापमयता और भ्रान्ति

भिन्नताएँ तब उत्पन्न होती हैं जब लोग या समूह गलत सिद्धांतों, क्रियाओं और भावनाओं में भटक जाते हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

भ्रान्ति को पहचानने के लिए हमें -

- आत्मालोचक होना होगा और उन सारी झूठी धारणाओं को त्यागना होगा जो हमारे धर्मविज्ञान में प्रवेश कर चुकी हैं।
- अन्य विश्वासियों की सहायता करने के लिए तैयार रहना होगा ताकि वे भी अपनी समझ को बढ़ा सकें।

3. मसीही परंपराएं (23:14)

A. “परंपरा” की परिभाषा (23:54)

1. नकारात्मक परिभाषा (24:20)

आज “परंपरा’ शब्द का भावार्थ नकारत्मक हो गया है क्योंकि यह उससे बहुत गहराई से जुड़ा है जिसे हम “परंपरावाद” कहेंगे।

परंपरावाद धर्मविज्ञानी विश्वासों को मानवीय सन्दर्भों पर आधारित करता है, आमतौर पर लम्बे समय से चली आ रही पारम्परिक प्राथमिकताओं पर, न कि पवित्रशास्त्र पर।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मसीह के अनुयायियों को परंपरावाद को त्यागना चाहिए क्योंकि यह मात्रा मानवीय विचार को वह अधिकार प्रदान करता है जो वास्तव में केवल वचन का है।

2. सकारात्मक परिभाषा (25:47)

पौलुस ने मसीही विश्वास को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाई जाने वाली परंपरा के रूप में देखा।

धर्मविज्ञानी परंपरा : लम्बे समय से चला आ रहा धर्मविज्ञानी सिद्धान्त, व्यवहार या भावना जो कलीसिया की शाखाओं को एक-दूसरे से अलग करते हैं।

- “लम्बे समय से चला आ रहा धर्मविज्ञानी सिद्धान्त, व्यवहार या भावना”

  वर्षों से स्वीकृति प्राप्त धारणाओं को ही परंपराएं माना जाता है।

- “जो कलीसिया की शाखाओं को एक-दूसरे से अलग करते हैं।”

  जब विश्वासी एक लम्बे समय तक साझे दृष्टिकोणों को रखते हैं तो ये दृष्टिकोण उनके विशिष्ट धर्मविज्ञानी मार्ग बन जाते हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. परंपराओं की प्रवृत्तियां (28:40)

मसीहियत के भीतर भिन्न धर्मविज्ञानी परंपराएं एक या दो या तीन श्रेणियों में विभाजित होती हैं :

- वे जो सिद्धांत पर बल देते हैं
- वे जो व्यवहार पर बल देते हैं
- वे जो भावनाओं पर बल देते हैं

1. सिद्धांत (29:16)

- उनकी शैक्षिक सेवकाइयां और सैद्धांतिक दृष्टिकोण उनके मसीही विश्वास के केंद्र की रचना करते हैं।
- वे सैद्धांतिक वाद-विवाद से बहुत अधिक भरे रहते हैं।
- सामान्यतः विशाल सैद्धांतिक एकरूपता पर बल देते हैं।
- प्रायः बौद्धिकतावाद की ओर प्रेरित करते हैं।

2. व्यवहार (29:58)

- उनकी मसीही सेवा और कार्यक्रम उनकी महानतम ताकत है।
- उनके पास क्या करना है और क्या नहीं करना है, इसकी लम्बी सूची होती है।
- प्रायः मसीही विश्वास केवल गतिविधि तक सीमित करते हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- प्रायः क़ानूनवाद की ओर प्रेरित करता है।

3. कारुणिकता (भावनाएं) (30:33)

- धार्मिक सौहार्द को इतना अधिक महत्व दिया जाता है कि बहुत बार अन्य बातों का कोई महत्व नहीं रहता है।
- वे किसी विशेष प्रकार का व्यवहार तब तक नहीं करना चाहते हैं जब तक कि उनके कारण वे बेहतर महसूस न करें।
- इसमें प्रायः भावनात्मक विशेषता पाई जाती है।

C. परंपराओं का महत्व (31:22)

1. अपने बारे में जागरुकता (31:49)

पुनर्जागिरण काल के बाद से बाइबल के गम्भीर शैक्षणिक अध्ययन का लक्ष्य स्वयं को धर्मविज्ञानी पूर्वाग्रहों और परंपराओं से अलग करना था।

आधुनिक उदारवाद धर्मविज्ञान पर इस आधुनिक पुनर्जागिरण कार्यक्रम को लागू किए जाने का परिणाम है।

हमारे लिए उस विरासत को ज्यादा से ज्यादा जानना लाभदायक है जो धर्मविज्ञान के निर्माण में निरन्तर हम पर प्रभाव डालती है क्योंकि स्व-जागरूकता हमें इन प्रभावों को जाँचने और उनका प्रबन्ध करने के योग्य बनाती है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. दूसरों के बारे में जागरूकता (34:47)

जब कभी हम दूसरे विश्वासियों के साथ धर्मविज्ञान की चर्चा करते हैं, तो हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि उनके संगठन और उनकी परंपराएँ इन पर बड़ा प्रभाव रखते हैं :

- विश्वास
- कार्यलक्ष्य
- प्राथमिकताएं
- ताकतें
- कमजोरियां

दूसरों के बारे में इसे हम जितना अधिक पहचानते हैं, उनके साथ हमारा मेलजोल उतना ही फलवन्त होता जाएगा।

4. सुधारवादी परंपरा (35:39)

A. उत्पत्ति एवं विकास (37:27)

"सुधारवादी धर्मविज्ञान" शब्द प्रोटेस्टेन्ट धर्मसुधार आन्दोलन से आया है। विशालतः "सुधारवादी" कलीसियाओं में ये शामिल हैं :

- जर्मनी में लूथर के अनुयायी
- ज्यूरिख में ज्विंगली के अनुयायी
- जिनेवा में काल्विन के अनुयायी

विशेष रूप से "सुधारवादी" शब्द प्राथमिक रूप से उन प्रोटेस्टेंट समूहों के लिए था जिन पर जाँन काल्विन के धर्मविज्ञान का गहरा प्रभाव पड़ा।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

प्रारम्भिक महाद्विपीय सुधारवादी धर्मविज्ञान के कई मुख्य बिन्दु निम्नलिखित हैं :

- बेल्जिक अंगीकार, 1561
- हेडलबर्ग कैटेकिज़्म, 1563
- डोर्ट के सिनोड 1618-1619
- डोर्ट के कैनन
- जॉन नॉक्स, 1505-1572
- स्कॉटिश अंगीकार, 1560
- वेस्टमिनस्टर विश्वास का अंगीकार , 1646
- वेस्टमिनस्टर लार्जर एंड शोर्टर कैटेकिज़्म, 1647-1648
- लन्दन बैपटिस्ट अंगीकार, 1644

सुधारवादी परंपरा संसार के अन्य भागों में भी फैल गई।

B. प्रवृत्तियां (41:35)

सुधारवादी परंपरा ने सिद्धान्तों को पहला स्थान और व्यवहारों को दूसरा स्थान दिया है। कुछ शुद्धतावादी लेखकों के अपवादों को छोड़कर, भावनाओं पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया है।

जब भावनाओं को दरकिनार करने की कीमत पर सिद्धान्त और उत्तरदायित्व पर बल दिया जाता है :

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- सिद्धान्त पर हमारा बल बुद्धिवाद की ओर मुड़ सकता है।

- उत्तरदायित्व पर हमारा बल कानूनवाद की ओर मुड़ सकता है।

C. विशेषताएं (43:58)

1. धर्मसुधार आन्दोलन के *सोला* (44:40)

ये सिद्धान्त पारम्परिक रूप से लैटिन कथनों में हैं जिन सब में "सोला" शब्द आता है, जिसका अर्थ है "केवल" या "मात्र"।

- *सोला स्क्रिप्चरा* — केवल वचन ही विश्वास और जीवन की अचूक कसौटी है।

- *सोलो क्रिस्टो* — परमेश्वर और मनुष्यों के बीच केवल यीशु मसीह ही एकमात्र बिचवई है।

- *सोला फिडे* — परमेश्वर केवल विश्वास ही के द्वारा विश्वासियों को धर्मी ठहराता है, किसी और साधन से नहीं।

- *सोला ग्राटिया* — हमारा कोई भी व्यक्तिगत गुण हमारे उद्धार में किसी प्रकार का योगदान नहीं करता है।

- *सोली डियो ग्लोरिया* — सारी सृष्टि और सृष्टि के अन्दर के कार्य अन्तिम रूप से केवल परमेश्वर की महिमा के लिए बनाए गए हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. पवित्रशास्त्र की एकता (47:15)

सुधारवादी परंपरा पुराने और नए नियम की एकता पर बल देती है।

सुधारवादी धर्मविज्ञान के विपरीत दैवीय अनुकम्पावाद पुराने और नए नियम के बीच एक आधारभूत अलगाव को सिखाता है।

सुधारवादी परंपरा संपूर्ण बाइबल को एक एकीकृत धर्मविज्ञान को प्रस्तुत करने के रूप में देखती है।

पुराना और नया नियम "अनुग्रह की दो वाचाएँ नहीं हैं जो तत्व में अलग हैं, बल्कि विभिन्न कालों के अंतर्गत एक और समान हैं।" (वेस्टमिन्स्टर विश्वास अंगीकार 7.6)

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. परमेश्वर का सिद्धांत (50:23)

सुधारवादी धर्मविज्ञान परमेश्वर के सिद्धांत पर विशेष बल देता है।

सुधारवादी धर्मविज्ञान की प्रवृत्ति परमेश्वर की व्यापकता से अधिक अपरम्पारता पर बल देने की रही है।

1920 के दशक के बाद से, उत्तरी अमरीका के बहुत से भागों और संयुक्त राज्य में सुधारवादी धर्मविज्ञान की बेदारी छाई रही है।

4. मानवीय संस्कृति (54:20)

रिचर्ड नेबर अपनी पुस्तक "क्राइस्ट एण्ड कल्चर" में पांच मुख्य समूहों में विभिन्न मसीही दृष्टिकोणों को एकत्रित करता है।

- *संस्कृति के विरूद्ध मसीह* — संस्कृति बुरी है मसीहियों को उससे बचना चाहिए।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- *संस्कृति का मसीह* — संस्कृति की पुष्टि करता है और मसीह को संसार में जो कुछ पाया जाता है उसमें शामिल करने का प्रयास करता है।

- *संस्कृति से ऊपर मसीह* — मसीह और संसार को मिलाने का प्रयास करता है

- *मसीह और विरोधाभास में संस्कृति* — मसीह और संसार के बीच द्वैतवाद

- *मसीह संस्कृति का रूपान्तरण करने वाला* — मसीहियत को संस्कृतियों पर प्रभाव डालना और उन में बाइबल-संबंधी नियमों के अनुरूप “परिवर्तन” लाना चाहिए।

नेबर के दृष्टिकोण से सुधारवादी विचारधारा मसीह को संस्कृति के बदलने वाले के रूप में देखती है।

मसीह द्वारा अपनी कलीसिया को दिया गया सुसमाचार का आदेश परमेश्वर के जनों को पाप से छुड़ाने के लिए दिया गया था ताकि इस सांस्कृतिक आदेश को पूरा किया जा सके।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

जीवन का हर पहलू मसीह की प्रभुता के अधीन लाया जाना चाहिए। सम्पूर्ण जीवन धार्मिक है, जो या तो सच्चे या झूठे धर्म द्वारा शासित होता है।

5. उपसंहार (58:32)

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. “मसीही धर्मविज्ञान” को परिभाषित करना कठिन क्यों है?

2. हमें उस कार्यकारी परिभाषा के साथ सहमत क्यों होना चाहिए जो प्रेरितों के विश्वास-कथन से सहमत होती है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. मसीह की देह की एकता का आधार क्या है? मसीह की देह के भीतर धर्मविज्ञानीय एकता को बढाने की जिम्मेदारी हमारी क्यों है?

4. मसीह की देह के भीतर विविधता का क्या आधार है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. जब हम मसीही धर्मविज्ञान का सर्वेक्षण करते हैं तो धर्मविज्ञानीय एकता और विविधता के विषय में संतुलित दृष्टिकोण को बनाए रखना क्यों जरुरी है?

6. “परंपरा” क्या है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. उन तीन प्रवृत्तियों का वर्णन करो जिसका अनुसरण धर्मविज्ञानीय परंपराएं करती हैं।

8. किस प्रकार स्व-जारुकता और दूसरों के बारे में जागरुकता हमारी धर्मविज्ञानीय परंपराओं को प्रभावित करते हैं?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं को दर्शाते हुए, सुधारवादी धर्मविज्ञान के विकास की संक्षिप्त ऐतिहासिक रूपरेखा प्रदान करें।

10. सुधारवादी परंपरा की धर्मविज्ञानीय प्रवृत्तियां क्या हैं?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

11. सुधारवादी परंपरा की चारों विशिष्टताओं को सारगर्भित करें।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. क्या आप को प्रेरितों के विश्वास-कथन के सभी सिद्धांतों पर विश्वास करना चाहिए? क्यों या क्यों नहीं?

2. जिस प्रकार आप कलीसिया की अन्य शाखाओं को देखते और उनके साथ व्यवहार करते हैं, उस पर सभी विश्वासियों की धर्मविज्ञानीय एकता का क्या आशय है?

3. आपके धर्मविज्ञान पर आपकी धर्मविज्ञानीय परंपरा ने कौनसे सकारात्मक प्रभाव डाले थे? इसके नकारात्मक प्रभाव क्या थे?

4. आपकी परंपरा के क्या महत्व हैं? इनकी ताकतें और कमजोरियां क्या-क्या हैं? ताकतों को खोए बिना आप इन कमजोरियों को दूर करने के लिए अपने महत्वों को कैसे बदल सकते हैं?

5. सुधारवादी धर्मविज्ञान की कुछ ताकतें और खतरे क्या हैं? इन अध्ययनों के पीछे की परंपरा का आपका ज्ञान किन रूपों में उनमें पाई जाने वाली गलत बातों से सत्य को अलग करने में सहायता कर सकता है?

6. सुधारवादी धर्मविज्ञान इस बात पर बल देती है कि सारा जीवन धार्मिक है। आप इस विचार से सहमत हैं या असहमत? क्यों और क्यों नहीं?

7. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org